28 OCT 2010 दै. नव दुनियाँ, भोपाल

टंट्या के निमित्त वनवासी गौरव में वृद्धि

स्वाति तिवारी

मध्यप्रदेश में भारत की सर्वाधिक आदिवासी आबादी निवास करती है। प्रदेश की लगभग एक चौथाई जनसंख्या आदिवासी है। उनके समग्र विकास के बगैर प्रदेश के विकास की बात बेमानी है। मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान ने अब तक अपनी विकास यात्राओं को अलग-अलग आयामों से कभी खेत-खलियानों में किसानों से जोड़ा तो कभी गाँव-चौपालों में ग्रामीण जनता से। इस बार उनकी विकास यात्रा 28 अक्टूबर 2010 से इसी एक चौथाई आबादी वाले आदिवासियों से जुड़कर वनवासी सम्मान यात्रा के रूप में फिर आगे गतिमान होगी। वनवासी सम्मान यात्रा की शुरुआत खंडवा यानी पूर्वी निमाड़ की उस भूमि से होगी जहाँ रॉबिन हुड के नाम से प्रसिद्ध हुए क्रांतिकारी टंट्या भील का जन्म हुआ था। वनवासी क्षेत्र का एक ऐसा क्रांतिकारी जिसने अँगरेजों और अँगरेजी हुकूमत के खिलाफ आदिवासियों को एकत्र कर क्रांति का बिगुल बजाया था।

मुख्यमंत्री पंधाना तहसील के खालवा विकासखंड के ग्राम बड़दा से अपनी वनवासी सम्मान यात्रा शुरू करने जा रहे हैं। यात्रा का प्रथम चरण वनवासी क्षेत्र के एक सौ इक्तीस वर्ष पूर्व देश के इतिहास क्षितिज पर बारह वर्षों तक सतत जगमगाते रहे क्रांतिकारी

वनवासी सम्मान यात्रा

टंट्या भील को समर्पित है, जो जनजाति के गौरव हैं। वे एक ऐसे जननायक हैं जो वनवासियों के अदम्य साहस, चमत्कारी स्फूर्ति और संगठन शक्ति के प्रतीक हैं। एक ऐसा आदिवासी जननायक जिसे अँगरेज सरकार 'इंडियन रॉबिनहुड' (जननायक) कहती थी। द न्यूयॉर्क टाइम्स के 10 नवंबर 1889 के अंक में टंट्या मामा की गिरफ्तारी की खबर प्रमुखता से प्रकाशित हुई थी। इसमें टंट्या भील को इंडिया का रॉबिन हुड बताया गया था। टंट्या भील का जन्म तत्कालीन सीपी प्रांत के पूर्व निमाड़ जिले की पंधाना तहसील के बड़दा गाँव में हुआ था। भीलों के कौशल का प्रतीक टंट्या समाजवादी सपने साकार करने के लिए अँगरेजों और शोषकों का धन उनका सरकारी खजाना लूट कर जरूरतमंदों में बाँटता था।

छापामार युद्ध कौशल, अचूक निशानेबाज भीलों की पारंपरिक धनुर्विद्या में निपुण, जेल के सींखचों को तोड़कर भाग जाने में समर्थ टंट्या का जीवन जंगल, घाटी और अरण्य बीहड़ों और पर्वतों में अँगरेजों और होलकर राज्य की शक्तिशाली सेना से लोहा लेते हुए बीता। अँगरेजों ने इस जनमानस को जनविद्रोह के डर से कब और किस तारीख को फाँसी की सजा दी यह गुप्त रखा था। उन्हीं क्रांतिकारी वनवासी जननायक को प्रणाम करती वनवासी सम्मान यात्रा उनके जन्म स्थल से चलेगी जो अपने प्रथम चरण में निमाड़ से चार जिलों खंडवा, बुरहानपुर, खरगोन और बड़वानी में अपने पड़ाव डालेगी।

इस यात्रा के दौरान मुख्यमंत्री चाहते हैं आदिवासी अंचलों में, जनजातियों के हितलाभ से प्रत्यक्षत: जुड़ी गतिविधियों जैसे- पात्र हितग्राहियों को वन अधिकारों की मान्यता, मनरेगा के अंतर्गत मजदूरी का समय पर भुगतान, सार्वजनिक वितरण प्रणाली का प्रभावी क्रियान्वयन, छात्रावास और आश्रम शालाओं की व्यवस्था, विद्यालयों और अस्पतालों की सुव्यवस्था, इंदिरा आवास योजना का लाभ, पुलिस एवं आबकारी विभाग से संबंधित शिकायतों का निवारण, छात्रवृत्ति और शिष्यवृत्ति प्रदाय, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं आदि कार्यक्रमों के संबंध में प्राप्त आवेदनों का निराकरण विशेष रूप से किया जाए, इस बात का ध्यान रखा जाएगा।

अबुल फजल ने पूर्वी निमाड़ के लिए अपने वृत्तांत में लिखा है कि मूल निवासी भील, कुनबी और गोंड थे। आज फिर एक नया वृत्तांत आदिवासी, जनजातीय, वनवासी सम्मान यात्रा के रूप में लिखा जाए जो बरसों-बरस तक वनवासियों को विकास के पथ पर सम्मान देता रहे। यात्रा अपने उद्देश्य में एक तीर्थयात्रा में बदल जाए।